भारत की बदलती खाद्य प्रणालियाँ

प्रलिम्सि के लयि:

NFHS-5, हरति क्रांति, खाद्य एवं कृषि संगठन, संयुक्त राष्ट्र

मेन्स के लयि:

खाद्य प्रणालियों की स्थरिता और भवषि्य की चुनौतयिाँ

चर्चा में क्यों?

जलवायु परविर्तन के कारण आने वाले वर्षों में खाद्य प्रणालियों की स्थरिता महत्त्वपूर्ण होने जा रही है।

- भारत को अपनी खाद्य प्रणालियों में भी परविर्तन करना होगा, जनि्हें उच्च कृषि आय और पोषण सुरक्षा के लयि समावेशी और टकिाऊ होना चाहयि।
- इससे पहले खाद्य प्रणाली पर संयुक्त राष्ट्र की रपिोर्ट में बताया गया था कि वर्तमान खाद्य प्रणालियाँ शक्ति असंतुलन और असमानता के कारण अत्यधकि प्रभावति हैं और अधकिांश महलिाओं के पक्ष में नहीं हैं।

प्रमुख बदिु

- **खाद्य प्रणाली:**
  - खाद्य एवं कृषि संगठन (FAO) के अनुसार, खाद्य प्रणालियों में कारकों की पूरी शृंखला शामलि है:
    - कृषि, वानकी या मत्स्य पालन से प्राप्त खाद्य उत्पादों का उत्पादन, एकत्रीकरण, प्रसंस्करण, वतिरण, खपत, नपिटान और व्यापकता आर्थकि, सामाजकि एवं प्राकृतकि वातावरण के कुछ हस्सिों में अंतर्नहिति है।
- **भारतीय खाद्य प्रणालियों के सम्मुख उपस्थति वभिन्नि चुनौतयिाँ:**
  - **हरति क्रांति का प्रभाव:**
    - यद्यपि हरति क्रांति के कारण देश के कृषि वकिास में महत्त्वपूर्ण प्रगति हुई है, लेकनि इसने जल-जमाव, मट्टिी का कटाव, भू-जल की कमी और कृषि की अस्थरिता जैसी समस्याओं को भी जन्म दयिा है।
  - **वर्तमान नीतयिाँ:**
    - वर्तमान नीतयिाँ अभी भी 1960 के दशक की घाटे की मानसकिता पर आधारति हैं। खरीद, सब्सडिी और जल नीतयिाँ चावल और गेहूँ के पक्ष में हैं।
      - तीन फसलों (चावल, गेहूँ और गन्ना) की सचिाई में 75 से 80% पानी का प्रयोग होता है।
  - **कुपोषण:**
    - NFHS-5 से पता चलता है कि वर्ष 2019-20 में भी कई राज्यों में कुपोषण में कमी नहीं आई है। इसी तरह मोटापा भी बढ़ रहा है।
    - ग्रामीण भारत के लयि EAT-Lancet आहार संबंधी सफिारशिों के आधार पर प्रति व्यक्ति लागत प्रतदिनि 3 अमेरकिी डॉलर और 5 अमेरकिी डॉलर के बीच है। इसके वपिरीत वास्तवकि आहार लागत प्रति व्यक्ति प्रतदिनि लगभग 1 अमेरकिी डॉलर है।
- **भारत की खाद्य प्रणालियों को बदलने के लयि आवश्यक कदम:**
  - **फसल ववििधीकरण:**
    - पानी के अधकि समान वतिरण, टकिाऊ और जलवायु-लचीली कृषि हेतु बाजरा, दलहन, तलिहन, बागवानी के लयि फसल पैटर्न के ववििधीकरण की आवश्यकता है।
  - **कृषि क्षेत्र में संस्थागत परविर्तन:**
    - कसिान उत्पादक संगठनों (FPO) को छोटे भूमि धारकों को इनपुट और आउटपुट के बेहतर मूल्य की प्राप्ति में मदद करनी चाहयि।
      - ई-चौपाल जैसी पहल छोटे कसिानों को लाभान्वति करने वाली प्रौद्योगकिी का एक उदाहरण है।
    - महलिा सशक्तीकरण वशिेष रूप से आय और पोषण बढ़ाने के लयि महत्त्वपूर्ण है।
      - केरल में महलिा सहकारी समतियिाँ और कुदुम्बश्री जैसे समूह इसमें मददगार होंगे।
  - **सतत् खाद्य प्रणाली:**

- अनुमान बताते हैं कि खाद्य क्षेत्र विश्व के लगभग 30% **ग्रीनहाउस गैसों** का उत्सर्जन करता है।
- उत्पादन, मूल्य शृंखला और खपत में स्थिरता हासिल करनी होगी।

◦ **स्वास्थ्य अवसंरचना और सामाजिक सुरक्षा:**
- **कोविड-19** महामारी ने भारत जैसे देशों खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में कमज़ोर स्वास्थ्य बुनियादी ढाँचे की स्थिति को उजागर किया है।
- समावेशी खाद्य प्रणालियों के लिये भी मज़बूत सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रमों की आवश्यकता है। भारत को इन कार्यक्रमों का लंबा अनुभव है। भारत **राष्ट्रीय ग्रामीण रोज़गार गारंटी अधिनियम**, **सार्वजनिक वितरण प्रणाली (PDS)**, **एकीकृत बाल विकास योजना** (ICDS), **मध्याह्न भोजन कार्यक्रम** जैसे पोषण कार्यक्रमों को मज़बूती प्रदान कर गरीब और कमज़ोर समूहों की आय, आजीविका और पोषण में सुधार कर सकता है।

◦ **गैर-कृषि क्षेत्र:**
- टिकाऊ खाद्य प्रणालियों के लिये गैर-कृषि क्षेत्र की भूमिका समान रूप से महत्त्वपूर्ण है। श्रम प्रधान विनिर्माण और सेवाएँ कृषि पर दबाव को कम कर सकती हैं क्योंकि कृषि से होने वाली आय छोटे भूमि धारकों और अनौपचारिक श्रमिकों हेतु पर्याप्त नहीं है।
- इसलिये ग्रामीण **सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम आकार के उद्यमों (MSME)** और खाद्य प्रसंस्करण को मजबूत करना समाधान का हिस्सा है।

आगे की राह

संयुक्त राष्ट्र (UN) के महासचिव ने सतत् विकास के लिये वर्ष 2030 एजेंडा के दृष्टिकोण को साकार करने और दुनिया में कृषि-खाद्य प्रणालियों में सकारात्मक बदलाव हेतु रणनीति विकसित करने के लिये पहले संयुक्त राष्ट्र **खाद्य प्रणाली** शिखर सम्मेलन के आयोजन का आह्वान किया है, जिसे सितंबर 2021 में आयोजित किया जाएगा। यह **सतत् विकास लक्ष्यों** (SDG) को प्राप्त करने के लिये नीतियों को बढ़ावा देने का एक शानदार अवसर है।

इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिये विज्ञान और प्रौद्योगिकी महत्त्वपूर्ण चालक हैं। भारत को खाद्य प्रणाली परिवर्तन का भी लक्ष्य रखना चाहिये जो समावेशी और टिकाऊ हो, जिससे कृषि आय में वृद्धि तथा पोषण सुरक्षा सुनिश्चित हो सके।

स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/transforming-india-s-food-systems